आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 05 | उदयपुर शुक्रवार 15 मार्च 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

जैनेन्द्रजी ने कहा : प्रेम की महिमा ही यह है कि संयम उससे हारता है

उदयपुर में प्रख्यात चिंतक जैनेन्द्रजी से पत्नी और प्रेयसी को लेकर डॉ. महेन्द्र भानावत की हुई बेबाक बातचीत के महत्वपूर्ण अंश

प्रसिद्ध चिंतक जैनेन्द्रजी ने कहा कि पत्नी तो पत्नी की जगह है पर उससे भी अधिक प्रेयसी ज्यादा जरूरी है तो कई लोगों ने यह समझ लिया कि यह बात उन्होंने केवल साहित्यकारों के लिए कही है। इससे साहित्यकार वर्ग तो खुश ही हुआ पर जिन लोगों का साहित्य के अलावा अपना कार्य-संसार है वे लोग बड़े नाराज हुए कि प्रेयसी उनके लिए क्यों नहीं आवश्यक बताई गई।

जैनेन्द्रजी ने यदि यह बात कही है तो उनके अपने कई तर्क हो सकते हैं पर मैंने भी अपने ढंग से सोचा कि यही बात क्या महिलाओं के लिए नहीं कही जा सकती कि उनके लिए भी पति के अतिरिक्त एक प्रेमी जरूरी है। इसलिए वह कभी भी कोई बात किसी रंग-ढंग में उछालने में स्वतन्त्र है पर यदि ऐसी ही बात कोई नारी उठा दे तो पुरूष की क्या गत होगी। हमारे समाज में तो ऐसे प्रेमी-प्रेमिकाओं को बड़ा प्यार, इज्जत और आदर ही मिला है जिन्होंने प्रेम के रिश्ते में अपना सर्वस्व लुटा दिया। ढोला-मारू, मूमल- महेन्द्र, लैला-मजनू की आदर्श अमर गाथाएं सभी ने सुनी हैं।

वैसे प्रेम का रिश्ता बड़ा उलझन भरा और यातनाकारक ही है। कहने को भले ही हम कहते रहें पर समाज में स्वेच्छा-नारी-प्रेम को मान्यता नहीं है। **कौन स्त्री चाहेगी कि उसका पुरूष किसी अन्य प्रेयसी से लाड़ लड़ाये और कौन पुरूष चाहेगा कि उसकी स्त्री किसी प्रेमी के मोहपाश में बंधी रहे!**

जैनेन्द्रजी ने यह बात बहुत पहले कही थी पर अभी भी वे यही कहते आ रहे हैं। उनके कहने में कोई बदलाव नहीं आया है। आयु बढ़ने से प्रेयसी-रंग कम थोड़े ही होता है। एक दिन जब जैनेन्द्र ही राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के एक समारोह में आ गये तो मैं उनसे फिर यही बात छेड़ बैठा। इससे वे तनिक भी झल्लाए नहीं। जनुभाई (जनार्दनराय नागर) के शिवकृपा निवास पर 22 अप्रेल 1980 को भोजन का स्वाद लेते-लेते मैंने कई बातें उनसे

पूछ डालीं। उन्होंने अपने बूढ़े शरीर में बड़ी जवानी लेते हुए जो कुछ कहा, उसे मैं आप लोगों के लिए लिख रहा हूं ताकि वक्त जरूरत सबके काम आये।

उन्होंने कहा कि पत्नी और प्रेयसी को मैं अनिवार्य मानता हूं। प्रेम एक ऐसी विवशता है कि उस ओर आदमी खींचता है और यह जो जीवन की कशिश है वह समाप्त नहीं होती। मैं तो मानता हूं कि प्रेम सार्थक होता है। यह सार्थकता पत्नी से नहीं, प्रेयसी से होती है जिसके प्रति आदमी समर्पित हो जाना चाहता है।

उन्होंने प्रेयसी को साहित्यकारों के लिए ही नहीं अपितु सबके लिये आवश्यक बताया और कहा कि **यदि हम पति-पत्नी, प्रेमी -प्रेमिका चारों को अनिवार्य मान लेते हैं तो फिर कोई टूटन नहीं रहेगी। समाज में यदि इसे स्वीकारने की तैयारी नहीं है तो छल रहता है। हम लाख छिपाने की कोशिश करें, प्रेम छिपता नहीं है। प्रेम की महिमा ही यह है कि संयम उससे हारता है।**

मैंने पूछा कि पुरूष ही इस ओर अधिक सक्रिय क्यों दिखाई देते हैं? उत्तर में वे बोले- महिलाओं को अपेक्षकृत कम सुविधाएं हैं। उन्हें यदि पूरी सुविधाएं मिलें और समाज इसे स्वीकारे तो फिर देखिये। प्रेम- विवाह का प्रसंग चला पर जैनेन्द्रजी ने तो प्रेमविवाह के बाद भी प्रेमी-प्रेमिका के अस्तित्व को स्वीकारा है और कहा कि जो अनिवार्य है यदि स्त्री उसे स्वीकारेगी नहीं तो उसका फल भोगेगी और भोग भी रही है।

उनके यह कहने मैंने पूछा कि आप जब हर एक के लिए प्रेयसी अनिवार्य समझते हैं तो उसकी पूर्ति कैसे होगी? कहां से कोई प्राप्त करेगा प्रेयसी? वे बोले-अरे भाई प्रेयसी तो एक प्रकार की अप्सरा है। होटल अप्सरा नहीं, जहां हंगरी का मेरा एक मित्र जो मिलर ठहरा और जाते-जाते कह गया - 'दिस अप्सरा इज विदाउट अप्सरा।'

जिसके पास शरीर है ही नहीं। वह तो आपकी आंखें हैं जो शरीर दे देती है। यदि प्रेयसी के साथ भोगात्मक संबंध स्थापित कर लेंगे तो प्रेयसी भाव समाप्त हो जाएगा फिर आप अप्राप्ति की ओर चलते रहेंगे। अब यह आप ही निर्णय करें कि आप किस स्थिति में हैं। आपने कोई प्रेयसी पाल-वाल रखी है या आपके हाल बेहाल हैं। आप जानें, आपका काम जानें। आपका प्रेमी मन जानें या आपकी प्रेयसी जानें।

ख्याल जमराबीज का उर्फ बसी का बारूद-नाट्य

होली की तैयारी में जहां एक तरफ सारे देश में धूम मच जाती है रंग और पिचकारी की, वहां आज से कुछ वर्ष पहले तक राजस्थान के बसी नामक स्थान में होली मनाने के लिए बारूद की भूंगलियां तैयार की जाती थीं। यहां पढ़िये, उस खतरनाक खेल का विवरण डॉ. महेन्द्र भानावत से।

लगभग आठ सौ वर्षों की परम्परा का पोषण लिए बसी का जमराबीज का ख्याल अपनी शान, मान और मर्यादा के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध रहा है। होली रूपने से लेकर होली जलने के बाद जमराबीज तक प्रत्येक रात्रि को राजस्थान के करीब-करीब सभी गांवों और शहरों में होली के गीतों, गालों और ख्यालों की हुड़दंग मच जाती है।

'गैरिये' जब जमकर खेल की धमाल-चौकड़ी के लिए उतारू हो जाते हैं तो कभी-कभी उसका समां ऐसा बन्ध जाता है कि रात और प्रात का कुछ भी ध्यान नहीं रहता। इन्हीं दिनों बहुत से 'स्वांग-टंट्ये' भी निकाले जाते हैं जिससे लोकजीवन में सरसता तथा सजीवता का मादक भरा गुलाबीपन छाया रहता है।

बसी का बारूद-नाट्य जमराबीज को जमरा खाण्डने के बाद से लेकर पूरी रात तक होली के स्थान-विशेष 'थड़े' पर खेला जाता है। महीने भर पहले से ही इसकी भूमिका के रूप में पत्थरमार, लट्ठमार, लत्तीमार, गुस्तेमार तथा जूतेमार जैसे कई 'मार ख्याल' खेल चुकने के बाद अन्त में बारूद के बल पर बसी के बड़े-बूढ़े अपनी बहादुरी का परिचय देते हैं।

इसमें भाग लेने वाले सभी 'गैरेये' कहलाते हैं जो घर से निकलते वक्त आधी बोरी का गुग्गा धारण करते हैं। शरीर पर बोरी अथवा तप्पड़ का चोला पहन लेते हैं और उस पर खूब मिट्टी लपेट देते हैं ताकि शरीर पर बारूद का किसी प्रकार का असर न हो। बायें हाथ में बचाव एवं सुरक्षा के लिए ढाल अथवा तराजू का उल्टा पलड़ा तथा गरनारा की पोची लकड़ी रखते हैं ताकि बारूद की भूंगली के अचानक बुझ जाने पर उसे पुन: जला दी जाये। दायें हाथ में बारूद की जलती हुई बड़ी-बड़ी भूंगलियां रखी जाती हैं जिनसे रंग की पिचकारियों की तरह एक-दूसरे पर वार करते हुए अपनी वीरता का परिचय देते हैं। बारूद को पहले खूब पीसकर फिर उसमें कांच, घासलेट तथा शराब मिला दिया जाता है ताकि भूंगलियां अच्छी तरह से आग पकड़ सकें। बारूद भरी भूंगलियों पर गीली पीली मिट्टी से लपेटे सन के धागे बांध दिये जाते हैं ताकि भूंगलियां किसी कदर फटने न पायें। कोई-कोई भूंगलियों की जगह हिरन के सींग में बारूद भरकर अपना काम चला लेते हैं।

बसी के आधे भाग को खेड़ा तथा आधे को सेर कहते हैं इसलिए इस खेल में जो दो दल होते हैं उनमें से एक खेड़ा का तथा दूसरा सेर का कहलाता है। एक दल लक्ष्मीनाथजी की तथा दूसरा खोड्या भैरू की जय बोलता हुआ एक-दूसरे पर वार के रूप में खेल प्रारम्भ करता है। यह खेल अत्यन्त भयानक होता है जिसमें कई व्यक्ति घायल हो जाते हैं जो छह-छह महीनों तक बिस्तर से उठ नहीं पाते हैं। कइयों के भारी चोटें आती हैं तथा किसी-किसी को अपने प्राणों तक की आहुति देनी पड़ती है। इतना होते हुए भी सभी लोग बड़ी तन्मयता के साथ इसमें भाग लेते हैं। जमराबीज के इस ख्याल को बहुत दूर-दूर से देखने के लिए लोग उमड़ पड़ते हैं। आदिवासी लोग झुण्ड के झुण्ड रूप में चंग, मांदल, थाली तथा भूंगल आदि के साथ इसे देखने के लिए टूट पड़ते हैं। पूरे ख्याल तक आदिवासी लोग अपने वाद्यों से युद्ध-भूमि सा समां बांध देते हैं। बारूद के धुंए से सारा गांव आच्छादित हो जाता है। तीन-तीन दिन तक धुंआ वहां से साफ नहीं होने पाता है। इतना होते हुए भी सभी लोग अगले वर्ष की उस प्रतीक्षा में रहते हैं कि कब वह स्वर्ण दिन आए जबकि सभी लोग और अधिक अच्छे रूप में इस ख्याल को मना पायें।

गत कुछ ही वर्षों से किसी खिलाड़ी की मृत्यु हो जाने से राज्य की ओर से यह ख्याल बन्द करवा दिया गया परन्तु आज भी वहां के लोगों में वही जोश और उबाल है जो लगता है समय आने पर फिर कभी पासा पलट बैठेगा।

- धर्मयुग 15 फरवरी 1967 से साभार

पोथीखाना

हंसी, दिल्लगी, मौज-मस्ती और चुहलबाजी से भरी 'मसखरी'

उदयपुर में डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा संस्थापित साहित्यिक संस्था सम्प्रति संस्थान द्वारा सन् 1985 से प्रतिवर्ष होली पर कुछ मित्रों पर रंग-व्यंग्य की धारदार पिचकारियों स्वरूप विविध छन्दी काव्यात्मक पुछल्ले लिखे जाते रहे हैं।

इनका एक बहुत ही मनोहारी संग्रह 'मसखरी' नाम से 2010 में प्रकाशित किया गया। व्यंग्य चित्रों से भरपूर 92 पृष्ठीय इस पुस्तक का मूल्य 199 रूपया है। इस पुस्तक पर विद्वानों की जो सम्मतियां प्राप्त हुई उन्हें यहां प्रकाशित की जा रही हैं।

'मसखरी' हाथ में आई तो आनंद ही आ गया। पुछल्लों में मुझे तो रिजेक्ट पुछल्ले अधिक सटीक लगे। बगैर काटछांट के भानावतजी की यह साहित्यिक विधा व्यक्ति-मन की उजली झांकी है। छलछन्द, लागलपेट से अछूती।

-डॉ. मालती शर्मा, पूना

होली पर लिखे पुछल्लों का अद्‌भुत संग्रह 'मसखरी' की मसखरियों से गुजरकर लोटपोट हो गया। इससे उदयपुर की साहित्य जगत की हस्तियों से परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

-डॉ. बहादुरसिंह परमार, छतरपुर

डॉ. भानावत हास्यरस के कवि हैं, इसे मैंने अब जाना वर्ना मैं तो उन्हें लोक का रचनाकार, गद्यकार ही समझता रहा।

- डॉ. अर्जुनदास 'केसरी', सोनभद्र

'मसखरी' पढ़कर भावुक हो गया। हंसी के बजाय उदासी छा गई कि मैं ऐसे मस्त शहर का हिस्सा न बन पाया।

जिस सहृदयता से शहर के लोगों को चित्रित किया, वह किसी भी नागरिक के लिए स्पृहणीय है।

- डॉ. पल्लव, नई दिल्ली

डॉ. भानावत की लेखनी गजब की है। वे जिन्हें जानते हैं वे भी अनूठे हैं। उनकी स्टाइल मुझे बहुत पसंद आई। लोककला व संस्कृति के तो वे मर्मज्ञ हैं।

-उपध्यानचंद कोचर, बीकानेर

आपने बातें कहीं सच्ची खरी अच्छी लगी। दोस्तों के साथ में ये मसखरी अच्छी लगी।

-इकराम राजस्थानी, जयपुर

पच्चीस साल तक यह पुछल्ला-पुराण संजोये रखकर डॉ. भानावत ने जिस निष्ठा और महफिलबाजी का उदाहरण प्रस्तुत किया वह अनूठा और स्पृहणीय भी। हंसी-दिल्लगी, रंग-व्यंग्य, मौज-मस्ती, चुहलबाजी, छेड़खानी, चूंगट्या और मंगलकामनाओं भरी इस पुस्तक के लिए बधाई।

-सवाईसिंह शेखावत, जयपुर

भेंट मसखरी की मुझे मिली मित्र! आभार।
इसको कहते हैं विनोद में आत्मीय रसधार।।
एक मसखरी मुझसे भी कर डाली मेरे भाई।
माल सदर क्यों मेरे पते में काल सदर लिखवाई।।

- रघुराजसिंह हाड़ा, झालावाड़

प्रेमभरी अर मदभरी, महेन्द्र खिनाई मसखरी।
मनमानी कीधी घणी, लीधा सगला अंग झड़ी।।

- भूपतिराम साकरिया, वल्लभविद्यानगर

एक साथ ही व्यंग्य कविताओं का आनंद तो मिला ही, राजनेताओं और वहां के साहित्यकारों के चित्र-दर्शन का भी लाभ मिला। आपका शहर दोनों ही प्रकार के व्यक्तियों के लिए प्रसिद्ध है।

-जुगल जैथलिया, कोलकाता

विनोद वृत्ति से जीवन की नैया थपेड़ों में भी पार हो जाती है। नंदबाबू जहां होते हैं वहां तो फिर 'नंद के आनंद भयो, जय कन्हैयालाल की / हाथी दीन्हे घोड़ा दीन्हे और दीनी पालकी।'

इस किताब से मुझे उन दिनों की याद आ गई जब आंतरिक मूल्यांकन के लिए राजस्थान विवि में नंदजी आते थे। वहां उत्तर पुस्तिकाएं जांचते समय मिलजुल कर दोहों का सृजन भी होता था।

एक दोहा मुझे अब तक याद है-

कछु बांची, जांची नहीं, अंक सबन पै दीन।
तुम्हरी समता को करै, जीवनसिंह प्रवीण।।

-डॉ. जीवनसिंह, अलवर

यह कविता का जीवंत और नितांत लौकिक रूप है जो सर्जना को अपनी तरह समृद्ध करता है। इससे मुझे अपने शहर भरतपुर की परंपरा याद आ गई जहां हर बरस डुगडुगी निकलती थी।

-राजाराम भादू, जयपुर

भानावतजी आपको धन्यवाद लखबार।
उदयपुर के साहित्यकार इतना पाते प्यार।।
एक-एक को छांटकर खूब पिलाई भंग।
मसखरी के रूप में चटख जमाया रंग।।
जैसी जांकी योग्यता वैसी पाई गंध।
भानावत भरते रहे होली रंग हरचंद।।
हास्य व्यंग्य इतिहास में प्रभावी यह पोथी।
कोट पेंट उतारकर पहनादी धोती।।
ऐसा प्यार बंटे हर घर यह मेरी चाह।
मस्ती में डूबे आकंठ मनवा बेपरवाह।।

-विनोद सोमानी 'हंस', अजमेर

एक सुखद आश्चर्य की तरह मसखरी मिली। रंग व्यंग्य और मसखरी की छोड़छाड़ वाली पुस्तक पढ़ खूब आनंद आया। नंदजी और कई नाम मेरे परिचित हैं। उनकी मसखरी पढ़कर और भी मजा आया।

-मनमोहन सरल, मुंबई

मसखरी जैसी रसात्मक कृति पढ़कर बाग-बाग हो गया। होली पर कवि-मित्र नवल 'चौपटानंद' नाम सूं एक पोथी काढ़ी ही, जिण में सौ साहित्यकारों पर टिप्पणियां थी।

-केसरीकांत शर्मा 'केसरी', मंडावा

डॉ. भानावत एक मंजे हुए स्थापित साहित्यकार हैं। साहित्यकारों के आपसी माहौल को जिंदादिल रखने का अच्छा प्रयास है।

- नथमल केड़िया, कोलकाता

मसखरी में चित्रों का चयन और उनका वर्गीकरण यथा राजनीति के बंदे, साहित्य के सौदागर, स्मृतियों के सौरभ अतीव गरिमामय रूप में प्रस्तुत किये हैं। ऐसे प्रयास माधुर्य भाव वर्धक होते हैं पर अब जब मधुरता, सहजता, सरलता, सहनशीलता ही नहीं रही तो सीखना और पचाना दोनों कठिन हो गये हैं।

-दीनदयाल ओझा, जैसलमेर

मसखरी बहुत दिनों से मेरी टेबल से हट नहीं रही है। बड़ी विचित्र शैली को आपने अंजाम तक पहुंचाया है। वो कलमकार भाग्यवान और अपने फन में माहिर हैं जो आपके जहन में चढ़े और किताब की शोभा बने। आपकी सादगी, ताजगी और खुशमिजाजी को सलाम।

-अब्दुल जब्बार, चित्तौड़गढ़

सिंगा बड़ा अवलिया पीर

मध्यभारत के कबीर सन्त सिंगाजी उच्चकोटि के रहस्यवादी सन्त थे। निर्गुण ज्ञान-धारा में उनकी अद्‌भुत पहुंच थी। उन्होंने अपनी तपस्या और साधना से असंख्यक प्राणियों का कल्याण किया। वे गोस्वामी तुलसीदास महाराज के समकालीन थे। उसी समय महात्मा एकनाथ, सूरदास, मीरांबाई एवं गुरु अर्जुनदेव आदि समाज को आध्यात्मिक चिन्तन से प्रभावित कर रहे थे।

देश में धार्मिक उदारता और सामाजिक प्रेम की लहर दौड़ रही थी। वातावरण शान्तिमूलक था। सिंगाजी ने लोगों को संसार के किसी भी पदार्थ में आसक्त न रहते निरन्तर भगवान का भजन करने को प्रेरित किया। कहा भी-

सिंगा बड़ा अवलिया पीर,
जिसको सुमरे राव अमीर।

सिंगाजी का जन्म मध्यप्रदेश के बड़वानी राज्य के खजूरी ग्राम में विक्रम संवत् 1576 में हुआ। गृहस्थाश्रम में उनका मन नहीं लगता था। वे अनासक्ति और वैराग्य में विशेष रुचि रखते थे। भानगढ़ में राव साहब के यहां एक रूपये में हरकारे का कार्य करते थे। एक दिन सिंगाजी राव साहब की डाक लेकर घोड़े पर जा रहे थे। भैंसावा ग्राम में महात्मा ब्रह्मगिरि महाराज के शिष्य मनरंगीरजी पद गा रहे थे। उसे सुन सिंगाजी रोमांचित हो उठे। वे आत्मविभोर हो गए। उन्हें भान हुआ कि शरीर नश्वर है। परिवार से स्वार्थ का सम्बन्ध है।

सपत्नीक निरगुणे और डॉ. भानावत

संसार माया का पुतला है। कोई भी अन्त समय में साथ न देगा। वे अभिभूत हो सन्त के चरणों में गिर पड़े। उन्होंने कहा, महाराज मैं आपकी शरण में हूं। संसार में आसक्त था। मुझे आत्मज्ञान हो गया। आप मुझे अपना शिष्य बना मेरा उद्धार कीजिए। सन्त ने उनको अपना शिष्य बना लिया। राव साहब ने बहुत समझाया पर उनका वैराग्य मद न उतर सका।

सन्त सिंगाजी हरसूद आए। उन्होंने राम नाम की खेती आरम्भ की। जीविका के लिए भैंस चराने का काम अपनाया। भैंस चराने के साथ वे पद-रचना भी करते थे। अपने तीस साल के साधनामय जीवन में उन्होंने आठ सौ पदों की रचना की। कुछ समय के बाद वे फीफराड़ नदी के जंगल में रहने लगे, जहां जीवन के अन्तिम दिन तक रहे। उन्होंने अपने वैराग्य काल में निर्गुण ब्रह्म की उपासना की। सन्त सिंगाजी निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के सन्त थे। वे अखण्ड ब्रह्म पूजा में आजीवन संलग्न रहे। उन्होंने योग पुरुष निरंकार की अखण्ड ज्योति का दर्शन किया। घट-घट में निर्विकार सनातन तत्व का ज्ञान व साक्षात्कार किया। वे कबीर की तरह रहस्यवादी सन्त थे। वे ज्ञानी महात्मा थे। उनके तत्वान्वेषण में सरसता और परमानंद की चिन्मय ज्योति की झांकी मिलती है। उन्होंने योग से परे उठ कर कहा कि जल में नमक है। कमल कली में निरंजन, वासुदेव अविनाशी चिन्मय तत्व का निवास है। तीर्थ, व्रत, जप, योग और परमात्मा सब के सब अपने आप में ही विद्यमान हैं। वन-वन में खोजने से वस्तु-तत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। उनकी चिन्तन शैली उच्चकोटि की थी। उन्होंने समस्त चराचर में केवल एक परमात्मा की अभिव्यक्ति का अनुभव किया। इसी अनुभव के अनुरूप उन्होंने अपने संत-मत की प्राण-प्रतिष्ठा की।

सिंगाजी ने ज्ञान और भक्ति दोनों का आश्रय लिया। राम नाम में उनका बड़ा विश्वास था। भवसागर को पार करने का जहाज उनके मत से राम नाम ही है। उनकी उक्ति है-

राम नाम को जहाज बना ले
काठ भयो बहु सारा।
कह जिन सिंगा सुन भाई साधु
मनरंग उतरे पारा।।

यही सन्त-साहित्य को उनकी महत्वपूर्ण देन है। वे कहा करते थे कि जीते रहना मेरी ससुराल है और मरना नैहर। वे अपने जीवन के अन्तिम समय में फीफराड़ के जंगल में भजन करने लगे थे। उसी समय उनके मन में जीवन-मुक्ति की प्रबल इच्छा जागृत हुई। फीफराड़ नदी के तट पर विक्रम सम्वत् 1616 की श्रावण शुक्ला नवमी को उन्होंने जीवित समाधि ली। अपने हाथ से गड्ढ़ा खोदा। कपूर जलाया और समाधिस्थ हो गए। उन्होंने आठ सौ पद रचे।

पुस्तक- सन्त सिंगाजी जीवनी एक पदावली, बसन्त निरगुणे एवं रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी', आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002, पृ. 476, मूल्य 300/- रूपये।

- राजेन्द्रनाथ दुबे 'राजा'

होली के हस्ताड़े

यह गोली रस-रोली है

मुजरो :

होली रो मुजरो करां, रंग मलां सब ओर।
अंग-अंग फड़कै जदी, रात न दीखै भोर।।

डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर :

लोयल-टी पीता हूं
रोयल्टी खाता हूं
लिखते-लिखते
पोथीखाना बन जाता हूं
स्याही की पल्ली पर
कागज का टेंट तान
कलम गति टारत नांही टरे
के बैनर तले
बेधड़क बनारसी बन
जब चाहें आइये
आपके लिए
माथाखाऊ
पान हाजिर है।

कमर मेवाड़ी :

यारबाज और जिंदादिल रखती हैं
यादें
कुछ चले गए
इस चलाचली के खेले में

सरपट दौड़े कई घोड़े
टट्टू भी कई मिले
भरपेट दौड़े
सांप-बिच्छू-से
डकैती भी सहे
चुप रहे बिना कहे
हम भी चले जायेंगे
मौका मिला तो
फिर आयेंगे लेकर यादें
छाती पर मूंग दलने।

डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ :

हर गली में उकल रहा है
पकौड़ी-सा साहित्य
सृजन में तन्नाटा है
किन्तु लगता है
सभी ओर सन्नाटा है।
जैसे गोफण में भन्नाटा है।

डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी :

रोज-रोज ताजी रसदार जलेबी-सी
रचनाएं नैनन में नंदलाल की तरह

बसती जाती हैं
कुचमादी मौसम में
मौ-सम मौ-संग
न जाने कोई कणवींस्या
बंटी हुई रस्सी की तरह
हरवर तरवर
बिना आहट
खुजलाहट दे जाता है।

डॉ. देव कोठारी :

पुरुष हो
याकि देव-पुरुष

कौनसे लोक के वासी हो
कई चले गये हैं देवलोक
हम यहीं छिड़केंगे
एक नव-नया आलोक
एक नया दल सृजित करेंगे
दलदल याकि अदल बदल
याकि आल्हा उदल
सर्व सकल अकादमी चलायेंगे
हुर्रे ! फुर्रे !!

डॉ. कुंदन माली :

साहित्य की परख बोई
जरख मिला

मधु लेने गये
मति खोई
खांसते रहे खरड़ में
ऊंखली में सिर दिया
काम नहीं आया।

डॉ. नरेन्द्र व्यास :

बरसालू बादल नहीं,
खेत न देता साथ।
बीज धड़ूका नँह करे,
फल न फसल के पाथ।

किशन दाधीच :

गीत गोताखोर बन गये
प्रीत पलेवण कर गई
रीत किससे निभाऊं
कौन पाले पड़ा कीच
ढूंढ़ रहा हूं आंखें मीच।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' :

अब वह उड़ान नहीं रही

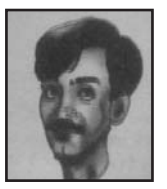

कई तरह की रोशनियों में
प्रकाश फीका पड़ गया है
तोता पिंजरे से निकल
अड़बे में घुस आया है
खेती धणियां सेती हो गई है
गायों के घुघरे कौन बांधे।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना :

बहुत हो गया

बंद हो गया है बंदे का
आना-जाना
वे दिन लद गए
जब लाद-लीद मिलते थे
अब मींगणों की महफिल में
जीभों की लापालोर और
जीमण की पंगत है।

डॉ. महेन्द्र भानावत :

यों ही नहीं
उग आती है ऐंठ
हर कोई नहीं हो जाता
कोईक, कोई एक

बिना लोये पापड़
बेलने पड़ते हैं
मूंछें
शेर के, चूहे के
और गेहूं की बालियों के भी
होती हैं
सबके ताव नहीं लगता है
मंडी के भाव
और भोपे के भाव में
फर्क होता है
बिना दवा के
देवरे में उतर जाता है ताव
इसीलिए कहा गया है
भाव-ताव देवरे में
जो भन्नाता है
वह भिन्न नहीं
अभिन्न होता है।

डॉ. शकुंतला पंवार :

लोकरंगी धुनकी में
चरखी के गन्ने-सी

मिठास लिए
बासंती हवा इतरा रही है
खलेची में
ठसक देती
इडोणी-सी
कमनीय कुंतल
लाखेणी लूंब बन
तलघर तलाश रही है।

कैलाश 'मानव' :

देखते-देखते
नारायण
कैलाश हो गया

मानव ही होता है
प्रभूत प्रशांत
श्वेत कमलासीन
सेवा का कल्प
वन्दना का स्वर
होते-होते
राष्ट्र का
कल्पनातीत
अकल्पनीय
तारा-सितारा बन गया।
वीकांग जब दिव्यांग होता है
ऐसा ही होता है।

डॉ. अंबालाल दमामी :

समय ने पल्टा खाया है

आम-इमली-सा
स्वाद दे रहा है
आदमी पर जानवर सवार है
तट नाव खे रहा है
रोशनदान की जगह सिंहद्वार है
छापरड़ा में गाय नहीं चरती
ब्रश से कविता नहीं झरती है।

डॉ. भगवतीलाल व्यास :

यार! अब कम सुनता हूं

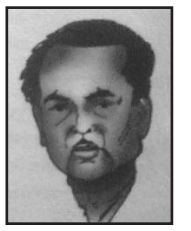

कम चलता हूं
कम आता-जाता हूं
कविता व्यंग्य कथा विकथा
व्यथा की खुरचण खाता हूं
सताते हैं
पुरस्कार सम्मान चकाचक
खाने को दौड़ती है पोथी
सब बातें थोथी।

डॉ. इकबाल सागर :

सागर में मेंडकी उछलती
डूब गई
मरी नहीं

गजब की गजल उठा लाई
तरन्नुम में तीर कसती रही
जलकुकड़ी
कूकड़ा बांग देना ही भूल गया
गया काम से।

डॉ. तुक्तक भानावत :

काम कोई भी हो
छोटा या कि बड़ा

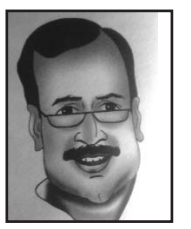

खपना खपाना होता है
जिम्मेदारी का जश्न
ऐसे ही नहीं मनता है
हल्के में मत लो
ठीकरी को
अच्छे अच्छों का
घड़ा फोड़ देती है
केवल तुक मिलाने से
कविता नहीं होती
घड़ी का टिक् टिक् होना ही काफी है।

शैलेष व्यास :

हम ही हैं अखबार
हमारा हम ही छापते हैं

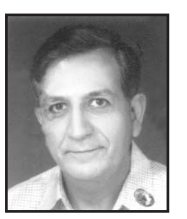

चलते-चलते
लिखदी हमने
ठालेराम की डायरी
अपना ही आईना देखते
कुंपल करते शायरी
अपने ही हालों में
खोये रहते हैं
अजी! कौन सुनता है
हम क्या करते हैं।

बुरा न मानो होली है

राजकुमार जैन 'राजन' :

राज गये, जन वे नहीं,
फिर भी देत मरोड़।
लख पसाव जाते रहे,
अब तो खेल करोड़।।

डॉ. दिलीप धींग :

होली पर करल्यो साजन
धींगा मस्ती।
पिचकारी दारी दे रंग
पतासी आ जा
करदे बेरंग।

पीछोकड़ै :

छांट पड़ै, छांटो पड़ै, छंट्यो छंटायो छैल।
होली ऊभी, हेत कर, वगत वांग दै गैल।।
रंग बंटै, मौका मिलै, मोल्या मारै जक्क।
छेड़छाड़ गोर्यां करै, बोदा बालम फक्क।।

-सम्प्रति के सौजन्य से

विमर्श की महिला संगोष्ठी

उदयपुर की विचार-संवाद संस्था विमर्श की महिला संगोष्ठी मुख्य अतिथि विनीता बोहरा तथा प्रमोदिनी बख्शी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। विशिष्ट अतिथि डॉ. रश्मि बोहरा तथा डॉ. शोभा देवपुरा थीं।

विमर्श अध्यक्ष डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ ने बताया कि संगोष्ठी में डॉ. मंजु चतुर्वेदी, विनीता बोहरा, प्रीता भार्गव, डॉ. मधु अग्रवाल, डॉ. राधिका लढ़ा, डॉ. शीतल श्रीमाली, नीलम शर्मा, प्रो. निर्मल गर्ग, डॉ. प्रभारानी गुप्ता, डॉ. अनुश्री राठौड़, रागिनी शर्मा, भूमिका चौबीसा, माया कुंभट, डॉ. राजकुमारी भार्गव, मनीषा जोशी, डॉ. मंजु त्रिपाठी, डॉ. इंदुबाला सोनी, दीपिका 'सत्यदीप', विजयलक्ष्मी देथा, आरती शर्मा, डॉ. तराना परवीन ने समधुर गीतों, गंभीर गजलों, रससिक्त कविताओं से श्रोताओं को रसमग्न कर दिया।

विचार सत्र में समाज विज्ञानी डॉ. बिनीता माथुर ने अकेलेपन की सामाजिकता, भूमिका चौबीसा ने महिलाओं के कानूनी मुद्दे, कल्पना जैन ने स्त्री मनोसंरचना तथा डॉ. रेणु खमेसरा ने स्त्री-स्वास्थ्य पर वक्तव्य दिये। डॉ. प्रभारानी गुप्ता, डॉ. इंद्रा जैन, पुष्पा कोठारी, माया कुंभट, प्रो. शारदा गुप्ता, कविता आतुर, मीना माथुर, ऋचा मेहता, पुष्पा कपुरिया, राजकुमारी त्यागी, शाहेदा शौकत, ललिता मेहरा ने पत्रवाचन तथा चर्चा-विमर्श में प्रभावी भूमिका दी। संयोजन चंद्रकाता बंसल ने किया।

- प्रेषक : डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 मार्च 2019

सम्पादकीय

होली का धड़ूका

होली पर अच्छों-अच्छों की
होती देखी रगड़पट्टी।
लोग चाहते भी हैं
मौसम भी ऐसा होता है
किसी से कर बैठो झगड़पट्टी।
कोई बालमा काली चूंदड़ पर राजी है
कोई अपनी निजी चाबी से
पराये का ताला खोल रहा है।
कोई लाल-पीला हो रहा है
बेमतलब
धमण में नाड़ा घाल रहा है
आंखों के कणकोले से
हरिया रूमाल हिल रहा है।
तुर्रा रूठ गया है
कलंगी स्याणी हो गई है
प्रेम पत्रिका
खजूर के टोंचे में फड़फड़ा रही है।
पुरानी यादें
बेदम हो गई हैं
सबरंग चिट्ठियां
बेरंग पड़ी हैं।
गुलाल रूठ गया है
तुमने उसे गाल की जगह
भाल पे मल दिया है।
आपको धन्यवाद
बिना कोई अपना रंग दिखाये
मुझे रंगों का मेचींग बता दिया
होली का राम-राम
अब गणगौर पर मिलेंगे।

होली रोपण
फोटो : दिनेश कुदाल

नृत्य में सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं समग्र उपचार

नृत्य एक कला ही नहीं, मनुष्य के अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ उसके भावनात्मक संतुलन, रोगमुक्ति, प्रभावशाली व्यक्तित्व का भी महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं। नृत्य चाहे शास्त्रीय हो अथवा लोक अंग-संचालन की महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में शरीर में लचीलापन उत्पन्न कर स्वास्थ्य की दृष्टि से सम्पूर्ण उपचार पद्धति है।

जड़ता चाहे भौतिक शरीर की हो अथवा मन-मस्तिष्क की, स्वयं में एक बड़ी व्याधि है। नृत्य के लिए शरीर को अधिक मात्रा में ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है इससे प्रणायाम के लाभ भी स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जाते हैं। नृत्य करने वाला व्यक्ति अपना सारा ध्यान नृत्य पर एकाग्र करता है। एकाग्रता ध्यान के समकक्ष है। इस दृष्टि से नृत्य में योग के सभी अंग समाहित हैं। अच्छा नृत्य करने वाला योगी से किसी तरह कम नहीं ठहरता।

नृत्य रूपांतरण का साधन भी है। इसमें अंगों का संचालन मनमाने तरीके से नहीं किया जाता। विभिन्न अंगों की गति नियत निश्चित होती है। हर नृत्य एक चरणबद्ध तरीके से किया जाता है। कौन सा चरण कब करना है, कैसे करना है सब पूर्व निर्धारित होता है। अत: नृत्य के दौरान शरीर के सभी अंग-उपांग ही नहीं, मस्तिष्क भी अत्यंत सक्रिय रहता है। यदि यह सक्रियता नहीं तो हमारा शरीर भी स्वस्थ नहीं रह सकता।

मस्तिष्क द्वारा ही हमारी सारी गतिविधियों का संचालन व नियंत्रण होता है। इससे हमारे मस्तिष्क की सक्रियता व एकाग्रता का विकास होता है साथ ही हमारे शरीर में उपयोगी रसायनों का उत्सर्जन प्रारंभ हो जाता है जिससे हमारी रोगावरोधक क्षमता का विकास भी होता है। कई नृत्य ऐसे भी होते हैं जिनसे व्यक्ति अनेक घातक रोगों व मनोविकारों से मुक्त होकर भावनात्मक रूप से संतुलित तथा मजबूत बनता है।

नृत्य द्वारा न केवल मोटापे से मुक्ति पाकर चुस्ती-स्फूर्ति पाई जा सकती है अपितु छरहरा शरीर व प्रभावशाली व्यक्तित्व भी प्राप्त किया जा सकता है। इसी सोच के रहते विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक आयोजनों के अवसर पर विभिन्न प्रकार के नृत्यों के प्रदर्शन की परम्परा का विकास हुआ। मनुष्य के समग्र उपचार व रूपांतरण में नृत्य के महत्त्व की उपेक्षा संभव नहीं अत: नृत्य को अपनी जीवनशैली का अंग बना लेना ही श्रेयस्कर होगा।

-सीताराम गुप्ता

खोज-खबर

चोली पूजन

चोली-पूजन का आयोजन सूर्यास्त के बाद किया जाता है। आयोजक सभी साधकों को नियत स्थान पर आमंत्रित करता है। किसी नए या संदिग्ध समझे जाने वाले व्यक्ति को उस स्थान पर आमंत्रित नहीं किया जाता है। पूजन में नए व्यक्ति का समावेश किसी पुराने साधक की सिफारिश से ही होता है लेकिन उसके लिए पूजन में अपनी पत्नी को भी शामिल करना अनिवार्य होता है।

उल्लेखनीय है कि ये सभी तंत्र साधक विवाहित होते हैं और उनकी पत्नियों को भी पूजन में भाग लेना पड़ता है। पूजन स्थल का पता केवल साधकों को ही मालूम होता है।

साधकगण सर्वप्रथम पूजन-स्थल की निरापद स्थिति से संतुष्ट होकर माता देवी की मूर्ति के समक्ष प्रार्थना करते हैं। तब प्रधान पुजारी एक बड़े पात्र में शराब भर कर पात्र-पूजन करता है। पूजन में शामिल सभी महिलाओं को पात्र में अपनी-अपनी चोली उतार कर डालनी होती है। चोली को शराब में भिगोकर प्रत्येक महिला अपने वक्ष साफ करती है। पूजन-प्रार्थना के दौरान बीच-बीच में पुरूष साधक घड़े के चारों ओर नाचते हुए शराब पीते हैं और अन्य जनों को पिलाते हैं।

प्रधान पुजारी देवी की मूर्ति की पूजा कर उसे नई चोली पहनाता है। इसी अवसर पर मेमने की बलि दी जाती है। मांस पकने तक शराब का दौर चलता रहता है। तत्पश्चात देवी को भोग लगाकर सभी साधक प्रसाद ग्रहण करते हैं। प्रसाद के बाद प्रत्येक पुरूष उस शराब के पात्र से एक-एक चोली उठाता है और जिस महिला की चोली उसके हाथ लग जाये उसके पास जा खड़ा होता है। सभी चोलियों का बटवारा हो जाने पर नर-नारी देवी की मूर्ति के समक्ष सामूहिक रूप से यौन क्रीड़ा में लिप्त हो जाते हैं। सामूहिक समागम समाप्त होने पर देवी का एक आभार सूचक पूजन और होता है।

-दैनिक हिंदुस्तान 20 मार्च 1998 से साभार

होली मंगलाते समय नवजात शिशु को ढूंढ़ाते वक्त सिर पर बांधने वाला मोड़ तैयार करता कलाकार।

सन् 2011 की होली पर डॉ. महेन्द्र भानावत के निवास पर साहित्यकारों में किशन दाधीच, नंद चतुर्वेदी, डॉ. पूनम दईया, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. कुन्दन माली तथा चेतन औदिच्य।

ओम थानवी पत्रकारिता विवि के कुलपति बने

डॉ. भानावत द्वारा डॉ. ओम थानवी को साहित्य भेंट। अवसर था उदयपुर में सम्प्रति संस्थान द्वारा 01 मार्च 2003 को पं. जनार्दनराय नागर स्मृति व्याख्यानमाला का। साहित्य के सामाजिक सरोकार विषय पर आयोजित इस व्याख्यानमाला में मुख्य अतिथि डॉ. ओम थानवी तथा पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक विश्वास मेहता थे। अध्यक्षता राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष वेद व्यास ने की।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों राजस्थान सरकार ने हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय में डॉ. थानवी को कुलपति नियुक्त किया है। शब्द रंजन की बधाई।

त्रि-लोचन की साहित्यिक यारबाजी

11 मार्च 2019 को शब्द रंजन कार्यालय में प्रख्यात कथाकार कमर मेवाड़ी तथा माधव नागदा ने डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। इस दौरान साहित्य के विभिन्न आयामों पर हो रहे रचनाकर्म पर गहन मंत्रणा की गई और पाया कि रचनाकारों में साहित्यिक चुनौतियों को ईमानदारीपूर्वक ग्रहण करने का जहां अभाव है वहीं आपसी गुटबाजी तथा तनातनी में गम्भीरतापूर्वक रचनाधर्मिता की बजाय सब ओर प्रतिष्ठा पाने की स्पर्धा अधिक है।

होली के बड़कुल्ले

डॉ. महेन्द्र भानावत :

डॉ महेन्द्र भानावत शब्द रंजन में, चावे जिने मतेड़रिया है।
राम भजवा री टेम में भी आप, दोई हाथाऊं बतेड़रिया है।।
जो चावे लिख सकां अबार तो, अबार होली रो मौको।
हाथी आगे चल्यो जाए रे भाई, भले गण्डक पाछे भौंको।।
अणा लाईणा रे भणवा वाला बेटी रा बाप मूं केऊं जो हूंण।
उदैपर में अस्यो लोककलाविद, अणावनां कूण।।

डॉ. तुक्तक भानावत :

डॉ. तुक्तक भानावत रा भी केई किस्सा, पण हुणाई दूंगा एक-आदो।
मूं देखूं आगो रेवा दो रे कठेई, नाराज वेइजावेगा दादो।।
भले ही एक आदो हुणाई भी दूं, पण वो कुण के जो माने।
चौबीसी घंटा मोबाईल रे चिपके, लेईने हुवे हराणे।।
चलो एक वात तो मूं हुणाई दूं, आपां डाल-डाल वी पाने- पाने।
जी काम दुनिया में चौड़े वेइरिया है, यो डागडर करे छाने- छाने।।

-भूपेन्द्रकुमार चौबीसा

स्मृतियों के शिखर (71) : डॉ. महेन्द्र भानावत

कुचामणी ख्यालों के नारी-पात्रों में शोभते उगमराज

''एक अच्छे खिलाड़ी में अच्छी नारी बनने की संभावना होना बहुत जरूरी है। पुरुष की सफलता ही लोकमंच पर इसी में है कि वह एक सफल नारी की सफलतम भूमिका का निर्वाह कर सके और लोगों को इस बात के लिए भ्रमित किये रखे कि जिस नारी पात्र का वह अभिनय कर रहा है वह सचमुच में नारी ही है। नारी जैसा स्वर, चाल, हावभाव, अदा और आंख-नाक-नक्श यदि पुरुष हू-ब-हू अपने में उतार ले तो वह एक श्रेष्ठ कलाकार के रूप में जन-जन की आंखों का तारा बना रह सकता है''

उगमराज राजस्थान के कुचामणी ख्यालों के सर्वाधिक लोकप्रिय अभिनेता थे जिन्होंने राजस्थान के लोकमंच को साठ से अधिक वर्षों तक समृद्ध परंपरा से पुष्ट किया। इन ख्यालों के प्रारंभकर्त्ता लच्छीराम थे। उनका जन्म कुचामन में हुआ किन्तु बाद में बुडसू के ठाकुर उन्हें अपने यहां ले आये। वे पढ़े-लिखे नहीं थे पर मेधावी थे। उन्होंने 25 के करीब ख्याल लिखे। अस्सी की उम्र में संवत् 1994 में उनका निधन हुआ।

कहते हैं उनकी पत्नी भी अच्छी रचनाकार थी। लच्छीराम के ख्यालों में उनकी पत्नी की भी बराबर की भूमिका रही। एकबार भीलवाड़ा जिले के गंगापुर में राजा रिड़मल का ख्याल आयोजित किया गया। उस खेल में राजा बनने वाला नशा कर कहीं दुबक गया तब उनकी पत्नी ने राजा की भूमिका कर न केवल खेल की लाज रखी अपितु भरपूर वाहवाही ली। लच्छीराम निसंतान थे। अपनी खोज-यात्राओं में मैंने बुड़सू-गंगापुर को भी नमन किया।

लच्छीराम के बाद उगमराज ने बड़ा नाम कमाया। कुचामणी ख्याल के प्रमुख छंद दोहा, कवित्त, शेर, सोरठा तथा छप्पय हैं। इनकी भाषा राजस्थानी-मारवाड़ी, हिन्दी-उर्दू मिश्रित होती है। धुनें सजीव किन्तु ठंडी, टेरें मंजी हुई तथा रंगतों का जमाव अधिक रिलामिला होता है। दोहों में चन्द्रायणी के स्थान पर तिल्लाणी चलती है। त्रिदिशीय मंच पर साधारण सज्जा लिये धरती पर ही ख्याल प्रदर्शन शुरू हो जाता है। अभिनेता के साथ-साथ गायकी में गवैये-बजैये भी महत्वपूर्ण भागीदारी अदा करते हैं। प्रथमबार आने वाला हर पात्र नृत्य की विशेष अदायगी में सर्वप्रथम अपना परिचय देता है। मजाकिया पात्रों की अधिकता लिये ये ख्याल नगारे ढोलक मजीरे और हारमोनियम की संगत लिये रात-रात भर कमाल की धमाल चौकड़ी भरते हैं।

नागौर जिले के मेड़ता रोड़ निवासी उगमराज जाति से ब्राह्मण थे। जब वे एक स्कूल में चपरासी थे तब उन्होंने एक ख्याल मंडली का सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र खेल देखा। उस खेल से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भी उसी तरह खेल करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। गुरु भंवरलाल पारीख और रामकरण के सान्निध्य में उन्होंने गाना-नाचना शुरू किया और देखते-देखते दर्शकों में हिये के हार बन गये।

उगमराज ने अपनी स्वयं की ख्याल मंडली बनाई और उसमें सबकेसब वे कलाकार रखे जो पिछड़ी जाति और अल्पसंख्यक समुदाय के थे। इस सम्बंध में उन्होंने बताया कि पिछड़ी जाति के कलाकार एक तो अनुशासनप्रिय होते हैं और फिर उनमें कला के प्रति अधिक सम्मान तथा समर्पण रहता है। गरीबी होने के कारण वे पूरी ईमानदारी से काम करते हैं और उसके पीछे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। यह बात दूसरी है कि आगे जाकर वे थोड़े अहंजीवी हो जाते हैं पर उनमें वे फितुर नहीं होते जो अन्यों में पैदा हो जाते हैं।

उगमराज डीलडौल से मोटे थे किंतु जब मंच पर सजधज कर आते तो बड़ा मोहक प्रभाव छोड़ते थे। उनमें कलाकारिता और उसकी अदायगी का अद्भुत गुण था। इससे वे सहज ही सबको आकर्षित कर लेते थे। राजस्थान की सामाजिक परम्परा ही यह रही कि औरत घर की ही शोभा बनी रहे। गज-गज भर के घूंघट में रहने वाली औरतों के लिए मनोरंजन के माध्यम से किसी मंच की शोभा बनना वर्जित रहने के कारण ही यहां महिलाओं की भूमिका पुरुषों द्वारा निभाई जाती रही। आज भी यहां के लोकमंच की यही स्थिति बनी हुई है।

उगमराज के दल में महिला पात्रों का यों भी अभाव था। ऐसे पुरुष कलाकार भी कम थे जो महिला का अभिनय कर सकें फलस्वरूप यह कार्य करने के लिए उन्होंने स्वयं अपने को ही प्रस्तुत कर दिया। इससे उनकी मंडली कुछ ही समय में सब ओर चर्चित हो गई। महत्वपूर्ण मेलों में तो उनके खेल देखने के लिए जो भीड़ उमड़ पड़ती वह कल्पनातीत थी। पुष्कर का जगप्रसिद्ध मेला ही पांच-छह दशकों तक उगमराज और उनकी ख्याल मंडली के कारण जन-मन-रंजन का जबर्दस्त आकर्षण बना रहा।

उगमराज ने बताया कि पच्चीस की उम्र में जब उन्होंने विवाह किया तो उनकी पत्नी के लिए यह बात बड़ी विस्मयजनक ही बनी रही कि वे महिला बनकर रात-रात भर लोगों का मनोरंजन करते हैं और हजारों लोग उनके अभिनय पर लट्टू होते हैं। उसने उनका महिला बनकर नाचना ठीक नहीं समझा तब उगमराज ने इस कार्य को छोड़ने की बजाय अपने साले को ही अपनी पार्टी में सम्मिलित कर लिया। इस सूझबूझ से वे अपनी पत्नी के प्रियवर ही बने रहे।

जवानी के अठारह-बीस वर्ष की उम्र में ही उनके कलाकार जीवन में जो चढ़ाव आया उसी ने राजस्थान के बाहर कोलकाता, मुम्बई जैसे शहरों में प्रवासी राजस्थानियों के बीच ख्याल प्रस्तुत करने की लोकप्रियता में चार चांद जड़ दिये। लम्बे घूंघट में पूरे शरीर को स्वर्णाभूषणों और ठेठ राजस्थानी परिधानों में सजाकर जब वे मंच पर रानी पात्र की भूमिका में उतरते तो दर्शक दांतों तले ऊंगली दबाकर उन्हें निहारते ही रह जाते। सुबह जब लोगों को पता चलता कि रात को जिस रानी ने अपना अद्भुत कमाल दिखाया वह नारी नहीं होकर पुरुष था तो लोगों को विश्वास नहीं होता।

भारतीय लोककला मण्डल में जब 1978 में लोकानुरंजन मेला प्रारम्भ किया तो उगमराज की ख्याल मंडली से मेले की लोकप्रियता ने बड़ा जोर पकड़ा। उनके ख्याल प्रदर्शन मैंने संगीत नाटक अकादमी के आयोजनों में भी विभिन्न स्थानों पर देखे। कई पुरस्कारों तथा सम्मानों से भी वे नवाजे गये परन्तु अंत तक सहज निरभिमानी, हेतालु और स्नेहिल छवि के ही बने रहे।

नारी पात्र के संबंध में उगमराज ने कहा भी- ''एक अच्छे खिलाड़ी में अच्छी नारी बनने की संभावना होना बहुत जरूरी है। पुरुष की सफलता ही लोकमंच पर इसी में है कि वह एक सफल नारी की सफलतम भूमिका का निर्वाह कर सके और लोगों को इस बात के लिए भ्रमित किये रखे कि जिस नारी पात्र का वह अभिनय कर रहा है वह सचमुच में नारी ही है। नारी जैसा स्वर, चाल, हावभाव, अदा और आंख-नाक-नक्श यदि पुरुष हू-ब-हू अपने में उतार ले तो वह एक श्रेष्ठ कलाकार के रूप में जन-जन की आंखों का तारा बना रह सकता है। मैंने ही नहीं, ख्याल दलों के जितने भी संचालक-उस्ताद एवं गुरु हुए हैं उन सबने नारी की श्रेष्ठतम भूमिका द्वारा अपने दल की सदा ही अमिट छाप छोड़ी है।''

राजस्थानी लोकमंच की यह विशेषता रही कि महिला पात्र घूंघट निकालने के कारण किसी तरह का मेकअप नहीं करता किंतु अब नये जमाने में जब घूंघट ही हटता जा रहा है तो मेकअप करना प्रारंभ कर दिया है। यह मेकअप अपने देहाती रूप में ही है। मात्र इसके लिए मुर्दासिंगी, काजल और सूखा हिंगलू ही प्रयोग में लाया जाता है। यह मुख विन्यास इतना टिकाऊ होता है कि इसे पानी से भी नहीं हटाया जा सकता। इसे दूर करने के लिए नारियल के तेल का उपयोग किया जाता है।

कुचामणी ख्याल वीर शृंगार और भक्तिरस प्रधान होते हैं। इनमें राजा हरिश्चंद्र, मीरांबाई, अमरसिंह राठौड़, गोगा चौहान, बाबा रामदेव, राजा मोरध्वज, जगदेव कंकाली, नानीबाई का माहेरा, प्रणवीर पाबूजी, महाराणा प्रताप जैसे ख्यालों को जनता रात-रात भर देखकर फूली नहीं समाती है।

ख्याल कलाकारों को बदलते जमाने में कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। फिल्मी गीत, कव्वाली आदि के कारण अब शुद्ध ख्यालों को देखना कम पसंद किया जा रहा है। यह भी कि पहले ख्याल शौकिया होते थे जबकि आज सब ओर व्यावसायिकता का बोलबाला है। तब भी उगमराज का दल सब ओर प्रसिद्धि थामे प्राणवंत बना रहा। शहरों में जहां-जहां भी वे अपना मंच मांडते, अच्छे खासे सिनेमाघर तक ठप्प हो जाते।

यह वह समय था जब राजस्थानी ख्यालों की विविध शैलियों में मारवाड़ी ख्यालों के सरताज उगमराज की तूती बोलती थी। यही सोच रूपायन संस्थान बोरूंदा में हबीब तनवीर, कोमल कोठारी और विजयदान देथा ने उगमराज के दल के साथ नया प्रयोग किया। इसके लिए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने अर्थ सहयोग प्रदान किया। एक कार्यशाला भी आयोजित की गई।

इसमें 'ख्याल पिरथीपालसिंह' की नई रचना की गई। जयपुर के रवीन्द्र मंच पर 02 अगस्त 1974 को इसका प्रदर्शन देवीलाल सामर के साथ मैंने भी देखा। सामरजी तब संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष थे।

प्रदर्शनोपरांत मैंने उगमराजजी से भेंट कर उन्हें, उनके गुरु भंवरलालजी, प्रमुख कलाकार रामकिशन, रामपाल तथा हास्याभिनय में बेजोड़ पुखराज को बधाई दी और उगमराजजी से पूछा कि क्या वे अपने पुराने ख्यालों को छोड़कर इसे हर जगह प्रस्तुत करेंगे? इस पर वे तनिक गंभीर हुए किन्तु दृढ़तापूर्वक बोले कि सरकार जहां-जहां इसका प्रदर्शन आयोजित कर रही है वहां तो इसे खेलेंगे ही बाकी गांवों में हमारा इरादा इसे पेश करने का नहीं है। फिलहाल न तो हम स्वयं और न जनता ही इसके साथ हिलमिल पाई है। इसे देखने के लिए धैर्य और दिलचस्पी चाहिए।

सामरजी को मैंने जब उगमराजजी के इस कथन की जानकारी दी तो बोले - जनता नवीन खेलों को तभी स्वीकार करती है जब उन ख्यालों में रंग भरने की उसे खुलकर आजादी मिले। ख्यालों में दर्शकों तथा प्रदर्शकों के बीच ऐसी समझ का तालमेल हो ताकि खिलाड़ी खुलकर अपने करतब दिखा सके। उस दिन लोकनाट्य ख्याल को लेकर सामरजी से मेरी लम्बी बातचीत हुई जिसमें अनेक सवाल-जवाब उभरते रहे। उन्होंने कहा- ''जरूरी नहीं कि लोकनाट्य के नायक गुणवान, धनवान, चरित्रवान तथा वीर, दिव्य और शक्ति सम्पन्न हों। समाज का कोई भी चमत्कारिक गुंडा, चोर, लुटेरा, इश्कबाज तथा धाड़ेती भी नायक हो सकता है। जनता के दिल में सभी तरह के चरित्र बसे रहते हैं। उनके प्रति श्रद्धा-आस्था भले ही नहीं हो किन्तु वे चमत्कारिक तथा ध्यान आकर्षित करने वाले तो होते ही हैं। ऐसे व्यक्तियों पर राजस्थान में अनेक ख्याल रचे गये हैं। दयाराम धाड़वी, इश्क परी, मस्त परी, आशिक देवर, छेल छबीली जैसे नायक उत्तम गुण धारक नहीं हैं परन्तु रंगीले मिजाज तथा विध्वंसकारी स्वभाव के कारण ख्यालों में विशेष रंग और रस की वर्षा कर देते हैं।''

सच ही है, लोकनाट्य ख्याल कोई बनाता नहीं। वह अपने आप बनता, रचता, पकता, परिपक्व होता रहता है लेकिन प्रारम्भ में किसी के द्वारा उसकी भूमिका की निर्मिति होनी जरूरी है। इसीलिए वे सामूहिकता की धरोहर होते हैं। प्रारम्भ कोई करता है। कोई शब्द देता है। कोई स्वर देता है। कोई कुछ और जोड़ता, घटाता, बढ़ाता है। ताल बांधता है। नृत्य घुंघराता है। विन्यास देता है। रूप निखारता है। लावण्यमय बनाता है। ऐसी न जाने कितनी पंगतों, पांतों, सरणियों तथा पदचापों में इठलाता लमछरित होता लोकनाट्य जनता तक पहुंचता है।

सामरजी ने ठीक ही कहा- ''लोकनाट्य कोई बनाता नहीं। अपने आप बनती हुई प्रक्रिया में कोई भी प्रतिभाशाली व्यक्ति अपनी रचना-शक्ति का उपयोग करता है। मनोरंजन की दृष्टि से गाता, बजाता, नाचता है। कथा-कथन करता है। स्वांग रचता है। स्वांग करता है। विशिष्ट प्रसंग एवं विशिष्ट व्यक्तियों के साथ उन्हें जोड़ देता है। विशिष्ट रचनाशील व्यक्ति उनमें धीरे-धीरे कोई विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता जाता है।

प्रतिभावान व्यक्ति उनमें अपना कुछ अधिक जोड़कर अपने नाम की छाप-मोहर भी लगा देता है। बाद में इनमें से कुछ नाटक अपना सामुदायिक रूप छोड़कर व्यावसायिक रूप धारण कर लेते हैं। उगमराज आदि के ख्याल सब इसी प्रकार के हैं।''

युगांडा में चिकित्सा शिविर आयोजित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान, युगांडा की टीम ने युगांडा के स्वास्थ्य मंत्रालय और होइमा रीजनल रेफरल हॉस्पिटल के सहयोग से 3 से 9 मार्च तक दिव्यांग लोगों के लिए 13वां शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किया। शिविर के माध्यम से 100 से अधिक बच्चों को सुधारात्मक सर्जरी और ऑपरेशन के बाद की अन्य सहायता प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया, ताकि वे बिना किसी शुल्क के विकलांगता के अभिशाप से छुटकारा पा सकें।

वंचित और दिव्यांग लोगों की सहायता के लिहाज से प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराने के लिए नारायण सेवा संस्थान की टीम ने युगांडा के स्वास्थ्य मंत्री, स्वास्थ्य मंत्रालय के निदेशकों के साथ टीम ने मुलागो, फोर्टपोर्टल और होइमा अस्पतालों के चिकित्सकों, मेडिकल स्टाफ, 13वें शिविर के मुख्य प्रायोजक डॉट सर्विसेज लि. के प्रबंधन और टीम एवं सत्य साई ट्रस्ट, ज्योतिका हार्डवेयर का आभार व्यक्त करते कहा कि स्वास्थ्य मंत्रालय के निरंतर सहयोग और भारतीय समुदाय के दानदाताओं की तरफ से मिले समर्थन की बदौलत वह अपनी सेवाओं को जारी रखना चाहती है, ताकि वंचित वर्ग के अधिक से अधिक ऐसे लोगों को इसका लाभ मिले।

संस्थान, युगांडा एक सामाजिक सेवा संगठन के रूप में नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर से प्रेरणा हासिल करता है, जिसका संचालन डॉ. कैलाश मानव और डॉ. प्रशांत अग्रवाल के कुशल नेतृत्व में किया जा रहा है। एनएसएस युगांडा भी आवश्यक क्षमता का निर्माण करने के लिए काम कर रहा है, ताकि युगांडा मेडिकल टीम और युगांडा के तकनीशियनों द्वारा स्थानीय बुनियादी सुविधाओं के साथ युगांडा में चिकित्सा सेवा प्रदान की जा सके।

सेमसंग एस 10 मोबाईल लॉन्च

उदयपुर। मोबाईल टेक्नोलोजी में निरंतर हो रहे परिवर्तन के बीच उदयपुर में नये फोन सेमसंग एस 10 की ग्रांड लॉचिंग जेडएसएम प्रज्ञान्शु बोस, एसईएम शहजाद अंसारी, उदयपुर के डिस्ट्रीब्यूटर भरत नागौरी, पेरागोन मोबाईल शॉप के प्रोपराइटर पुष्पेन्द्र जैन एवं सेवेंस टीम द्वारा की गई।

पुष्पेन्द्र जैन ने बताया कि इस मौके पर मोबाईल विक्रेता के साथ-साथ उपभोक्ताओं में भी खासा उत्साह देखा गया। पहले ही दिन नये मोबाईल को खरीदने के लिये बड़ी तादाद में ग्राहक पहुंचे। दुकानदारों ने पहले ग्राहक को मोबाईल देने के साथ तस्वीरें खींचवाई। पहले ही दिन ग्राहकों का उत्साह देख मोबाईल विक्रेता खासे उत्साहित हैं और वे भी ग्राहकों की मांग के अनुरूप मोबाईल सप्लाई करने की पुरी कोशिश करेंगे।

कैमॅन के दो नये स्मार्टफोन लॉन्च

उदयपुर। टेक्नो कैमॅन सीरीज़ की सफलता के चलते 2018 में चार्ट में सबसे आगे रहा। इस सीरीज़ ने कंपनी को भारत में सबसे तेजी से बढ़ता स्मार्टफोन ब्रांड बनाया। ट्रांसियॉन का ऑफ़लाइन कैमरा-सेंट्रिक स्मार्टफोन ब्रांड टेक्नो, क्षेत्रीय बाजारों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है और इसने 2019 की शुरुआत में अपने पोर्टफोलियो में कैमॅन आईएसीई 2 और कैमॅन आईएसीई 2 एक्स दो नए स्मार्टफ़ोन जोड़े हैं। ब्रांड ने उत्पाद को लेकर जागरुकता बढ़ाने और नये स्मार्टफोन्स की बेस्ट एनीलाइट कैमरा क्षमताओं को प्रदर्शित करने के लिए देशव्यापी स्थानीय जुड़ाव पहल को शुरू किया है।

जगुआर आई-पेस को मिला यूरोपीयन कार ऑफ द ईयर अवाड्र्स

उदयपुर। ऑल-इलेक्ट्रिक जगुआर आइ-पेस को यूरोपीयन कार ऑफ द ईयर अवाड्र्स 2019 में कार ऑफ द ईयर चुना गया है। यह पहली बार है, जब जगुआर ने प्रतिष्ठित पुरस्कार जीता है। यूरोपीयन कार ऑफ द ईयर ज्यूरी में 23 देशों के 60 मोटरिंग जर्नलिस्ट्स शामिल थे। यह पुरस्कार तकनीकी नवाचार, डिजाइन, परफॉर्मेंस, दक्षता और वैल्यू फॉर मनी को दर्शाता है।

प्रो. डॉ राल्फ स्पेथ, चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर, जगुआर लैंड रोवर ने कहा कि पहली इलेक्ट्रिक व्हीकल का यूरोपीयन कार ऑफ द ईयर में पुरस्कार जीतने वाली पहली जगुआर बनकर हमें बेहद गर्व हो रहा है। आइ-पेस को यूके में डिजाइन एवं निर्मित किया गया है। यह एक सबसे तकनीकी रूप से उन्नत बैटरी इलेक्ट्रिक व्हीकल है। यह एक असली गेम-चेंजर है। इसे दुनिया भर में बेहद सफलता मिली है। अभी तक 8,000 से ज्याादा ग्राहकों को इसकी डिलीवरी की जा चुकी है और इनमें से यूरोप में 75 प्रतिशत बिक्री शामिल है। आइ-पेस का लुक और ड्राइविंग सड़क पर कमाल का है।

किरण जिंक़ की अतिरिक्त निदेशक-चेयरमैन बनीं

उदयपुर। श्रीमती किरण अग्रवाल को हिन्दुस्तान जिंक़ के निदेशक मण्डल ने कम्पनी की अतिरिक्त निदेशक एवं चेयरमैन के पद पर नियुक्त किया है। हिन्दुस्तान जिंक़ विश्व की सबसे प्रगतिशील खनन कंपनियों में से एक है जो अपने स्थिर विकास की प्रतिबद्धता के साथ देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वैश्विक जस्ता, सीसा और चांदी के बाजार में हिन्दुस्तान जिंक भारत का प्रतिनिधित्व करता है। यह अपने आसपास के समुदाय के विकास और उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है।

सांगानेर में जन्मी किरण ने लंदन स्कूल ऑफ जर्नलिज्म से पत्रकारिता का अध्ययन किया। उन्हें पढ़ने-लिखने का बड़ा शौक है। विभिन्न व्यवसायिक विकास हेतु वे अपने कौशल को साझा करती हैं। श्रीमती अग्रवाल, अग्रवाल गेल्वेनाइजिंग़ प्रा. लि. के निदेशक मण्डल एवं वेदांता फाउण्डेशन की ट्रस्टी हैं।

डॉ. गौतम पीआईएमएस के मेडिकल डायरेक्टर नियुक्त

उदयपुर। पेसिफ़िक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (पीआईएमएस), उमरड़ा में डॉ. एस. के. गौतम को मेडिकल डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने बताया कि डॉ. गौतम को हॉस्पिटल एंड हेल्थकेयर मेनेजमेंट का 20 वर्षों से भी अधिक का अनुभव है जो इस संस्थान को शिखर तक पहचाने में मददगार होगा। डॉ. गौतम के अनुसार शीघ्र ही सेवाओं में विस्तार के साथ अगले सत्र से पोस्ट ग्रेजुएट (एमडी/ एमएस) कोर्स शुरू किया जायेगा जिसके लिये व्यापक स्तर पर कार्य प्रगति पर है।

डेबिट कार्ड कैशलेस बनने के लिए प्रेरित करेगा

उदयपुर। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा हाल ही में जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, देश में डिजिटल लेनदेन, जैसे कि विभिन्न प्रकार के पेमेंट कार्ड, वॉलेट, मोबाइल बैंकिंग आदि, में पिछले 2 वर्षों में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत में डेबिट कार्ड का उपयोग करने की प्राथमिकता बढ़ गई है। भारत और दक्षिण एशिया के वीजा ग्रुप कंट्री मैनेजर, टीआर रामचंद्रन ने बताया कि देश में 950 मिलियन से ज्यादा डेबिट कार्ड का होना और हर एक डेबिट कार्ड के साथ उसकी सुरक्षा, सहजता और सुविधा पर विश्वास जताना इस बात का प्रतीक है की भुगतान के लिए नगद से डेबिट कार्ड की ओर झुकाव हो रहा है। आज ग्राहकों को उनके कार्ड का उपयोग करने के लिए अधिक टच प्वाइंट उपलब्ध हैं। इसने न केवल उनके खरीदारी के अनुभव को सरल बनाया है बल्कि नकदी संभालने की परेशानियों से भी बचाया है।

गीतांजली में संभाग का पहला किडनी ट्रांसप्लांट

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के नेफ्रोलोजिस्ट डॉ गुलशन कुमार मुखिया एवं यूरोलोजिस्ट डॉ पंकज त्रिवेदी ने दक्षिणी राजस्थान में पहला सफल किडनी ट्रांसप्लांट किया जिसमें यूरोलोजिस्ट डॉ विश्वास बाहेती, नेफ्रोलोजिस्ट डॉ चेतन महाजन, एनेस्थेटिस्ट डॉ एसएस जैतावत, डॉ अनिल एवं डॉ उदय प्रताप, कार्डियोलोजिस्ट डॉ रमेश पटेल, इंफेक्शन कंट्रोलर डॉ उपासना भुम्बला का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्रेसवार्ता में डॉ मुखिया ने बताया कि 33 वर्षीय सलूम्बर निवासी नरेंद्र मेहता की दोनों किडनी फेल हो गईं। गीतांजली हॉस्पिटल में उन्हें किडनी ट्रांसप्लांट की सलाह दी गई। उनकी 53 वर्षीय माता बसंतीबाई ने स्वैच्छिक रुप से अपनी एक किडनी दान देने का निर्णय लिया। ट्रांसप्लांट के दो दिन पूर्व ब्लड ग्रुप व क्रॉस मेचिंग सुनिश्चित कर दवाइयाँ दी गई। तत्पश्चात् ऑपरेशन किया गया। सीईओ प्रतीम तम्बोली ने बताया कि गीतांजली में सर्जरी से पहले, सर्जरी के दौरान एवं सर्जरी के बाद होने वाली सभी प्रक्रियाएं अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा मापदण्डों के अनुसार की जाती है। गीतांजली ग्रुप के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल ने कहा कि उदयपुर शहर में किडनी ट्रांसप्लांट यूनिट का आरंभ होना समस्त मेवाड़ के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में यहां हृदय व लिवर ट्रांसप्लांट की सुविधाएं आरंभ होगी। वे स्व. नर्मदादेवी अग्रवाल के नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना कर रहे है जिसके अंतर्गत जरुरतमंद मरीजों को नि:शुल्क चिकित्सा उपलब्ध कराई जाएंगी।

आर्मर्ड रेंज रोवर सेंटिनल के नये वर्जन

उदयपुर। लैंड रोवर स्पेशल व्हीकल ऑपरेशंस ने आज अपने आर्मर्ड रेंज रोवर सेंटिनल के नवीनतम वर्जन का खुलासा किया, जिसमें अब ज्यादा दम, बेजोड़ रिफाइनमेंट, सभी तरह की राहों पर दौड़ने की क्षमता और सवारों की सुरक्षा के लिए नवीनतम सुविधाएं हैं। लैंड रोवर स्पेशल व्हीकल ऑपरेशंस के मैनेजिंग डायरेक्टर माइकल वैन डेर सैंडे ने कहा कि 380पीएस 5.0-लीटर सुपरचार्ज्ड वी8 पेट्रोल इंजन पहले फिट होने वाले वी6 पेट्रोल के मुकाबले पावर को 40पीएस बढ़ाता है।

इससे यह सुनिश्चित हो जाता है कि इस आर्मर्ड एसयूवी का सभी तरह के इलाकों में असाधारण रेंज रोवर प्रदर्शन बरकरार रहेगा। एक टन से अधिक की आर्मर प्लेट और ग्लास रखते हुए सेंटिनल 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार 10.4 सेकंड में पकड़ सकती है। इसकी रफ्तार की शीर्ष सीमा 193 किमी / घंटा है।

राजवी द्वारा जिंक फुटबॉल अकादमी का अवलोकन

उदयपुर। भारतीय दिग्गज फुटबॉलर और अर्जुन अवार्डी मगनसिंह राजवी ने जावर स्थित जिंक फुटबॉल अकादमी का दौरा किया। श्री राजवी ने 1970 के एशियाई खेलों में कांस्य पदक भी जीता। उन्होंने जावर में विश्वस्तरीय बुनियादी सुविधाओं को देखकर बहुत खुशी जताई और कहा कि इससे राजस्थान और भारतीय फुटबॉल भविष्य में अधिक ऊंचाइयों पर पहुंचेगा। यहां के बच्चे काफी प्रतिभाशाली हैं। अगर उन्हें सही मार्गदर्शन मिले तो ये न केवल राजस्थान में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच से देश का नाम रोशन कर सकते हैं।

साहित्य मंडल का पाटोत्सव

नाथद्वारा में साहित्य मंडल द्वारा दो दिवसीय पाटोत्सव का आयोजन किया गया। साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्यामलाल देवपुरा ने बताया कि समारोह में विभिन्न क्षेत्र

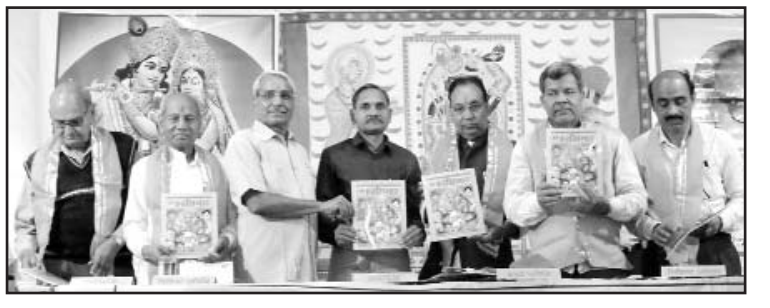

में विशिष्ट कार्य करनेवालों को सम्पादक शिरोमणि, श्रीनाथद्वारा रत्न, काव्य कलाधर, काव्य कौस्तुभ, डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक स्मृति सम्मान, समाज साहित्य सेवा रत्न, चिकित्सा सेवा रत्न, धर्म अध्यात्म सेवा रत्न, प्रकृति-पर्यावरण सेवा रत्न, शिवकुमार शास्त्री स्मृति सम्मान, ब्रजभाषा विभूषण, गणेशवल्लभ राठी स्मृति सम्मान, पूरणलाल शर्मा स्मृति सम्मान, डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर पत्रिका 'हरसिंगार' के वर्ष 22 अंक 1 का लोकार्पण किया गया।

- प्रस्तुति : श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित'

होली पामणी रे लाल

रंग और उमंग के होली त्यौहार को यदि आप राजस्थानी ढंग से मनाना चाहते हैं तो

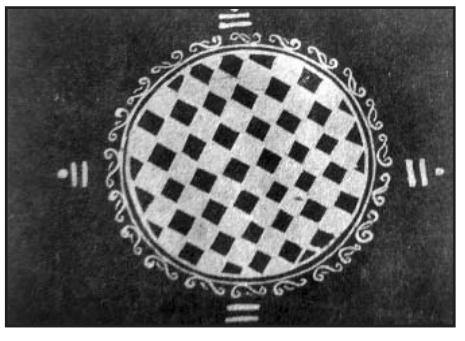

माण्डनें सजाइये, बड़ुल्ले बनाइये और होली पामणी रे लाल की धुन में मस्त हो जाइये।

राजस्थान रंग-रूपों की दृष्टि से अत्यन्त रंगीन प्रदेश कहा गया है। यहां के त्यौहारों

एवं उत्सवों में जितनी कलात्मकता, रंग-रूपता एवं संजीदगी देखने को मिलती है, उतनी अन्यत्र कम देखने को मिलती है। फाल्गुन शुक्ला एकादशी से बालिकाएं होली माता के लिए गोबर के नाना आभूषण एवं बड़ुल्ले बनाना प्रारम्भ कर देती हैं।

इन बड़ुल्लों में सोलह छोटे-छोटे गोल बड़ुल्लों के अलावा बोर, चूड़ी, रखड़ी, नेवरियां, टणके, तमण्या, हथपान, पांच तिकोने सिंघाड़े, पांच कापड़े, पांच सुपारी, कंघी, जीभ आदि होते हैं। एक नारियल भी बनाया जाता है। इन सभी में छोटे-छोटे छेद बनाकर मालाएं बना ली जाती हैं जो होली को पहना दी जाती हैं। इस दिन बालिकाएं होली थड़े (होली के स्थान पर) एकत्रित हो होली की चुंगी के रूप

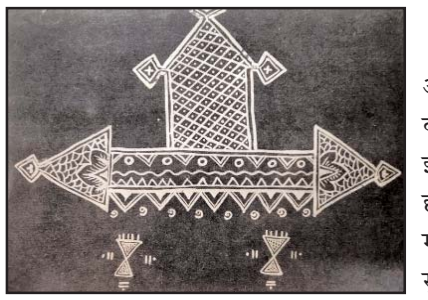

में अपने-अपने घर से लाई ज्वार की फुली, चने तथा सेव आदि आपस में बांट-खाकर, होली के नाना गीत गाकर स्वस्थ मनोरंजन करती हैं।

ऊबी रीझे होली
थारे रखड़ी
घड़ाई दूं
डाबा में मत मेल होली
फागण रा दिन च्यार होली
वेगी आवजे।

फाल्गुन मास में औरतें विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करती हैं। इनमें फागणिया प्रमुख है। होली पर फागणिया मंगवाने की बात कितनी सुहावनी लगती है-

फागण आयो रसिया फागणियो रंगाइ दो
पीलिया में मच रही होली, रम रही होली
होली आई रे.....

इस दिन घर-आंगन लींप-पोतकर नाना प्रकार के माण्डनें माण्डे जाते हैं। इन माण्डनों

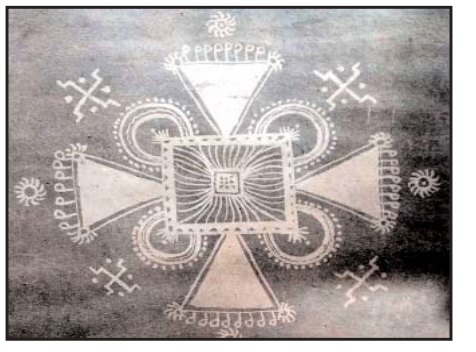

में चौक, चंग, कमल का फूल मुख्य है। ये नाना माण्डनें चिड़कलियों, घेवरों, जलेबियों, मुरकियों तथा बेल-बूंटों से सजा दिये जाते हैं।

होली के दूसरे दिन प्रथम होली पर छोटे-छोटे बच्चों को राख का तिलक लगाकर होली की सात परिक्रमाएं दिलाई जाती हैं जिसे ढूंढाना या शादी कराना कहते हैं। ढूंढाने वाले अपने साथ नारियल आदि लाते हैं जिसे वहां बैठ गैर खेलने वाले गैर्‌ये खाते हैं और इस प्रतीक्षा में रहते हैं कि होली जल्दी से जल्दी आये ताकि ढूंढाने वालों में गैर्‌यों को खूब भुजिये-पापड़ी खाने को मिले।

-डॉ. कहानी भानावत

नि:शुल्क दिव्यांग चिकित्सा शिविर आयोजित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के चैनराज सावंतराज पोलियो हॉस्पीटल में शुक्रवार को बड़ी स्थित लियों के गुड़ा में सुप्रसिद्ध भजन गायिका किरण डांगी एण्ड पार्टी ने 101 जन्मजात पोलियोग्रस्त बच्चों के नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का

उद्घाटन किया तथा पूर्व पोलियोग्रस्त दिव्यांग जो नि:शुल्क ऑपरेशन से स्वस्थ हुए बच्चों, किशोर-किशोरियों से कुशलक्षेम पूछी। नि:शुल्क दिव्यांग चिकित्सा, मूक-बधिर व विमंदित बच्चों द्वारा तैयार शिल्प एवं दिव्यांगों के निशुल्क रोजगारपरक प्रशिक्षण आदि कार्यों का अवलोकन किया। उन्होंने कहा दिव्यांगजन की नि:शुल्क चिकित्सा के साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किए जाने चाहिए। सेवा और परोपकार तभी हो सकते है जब व्यक्ति में संवेदना और भावना हो। जीवन का हर क्षण आनन्द और उत्साह से भरपूर रहना चाहिए और इसके लिए दूसरों की सेवा और प्रभु का स्मरण ही एकमात्र उपाय है। संस्थान अध्यक्ष प्रंशात अग्रवाल ने बताया कि इस विशेष चिकित्सा शिविर में उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, झारखण्ड, राजस्थान, गुजरात, दिल्ली आदि राज्यों के बच्चों के ऑपरेशन डॉ. ए. एस. चूण्डावत व डॉ. ओ. डी. माथुर की टीम ने किए। संचालन आदित्य चौबीसा ने किया।

एचडीएफसी लाइफ संचय प्लस लॉन्च

उदयपुर। भारत की प्रमुख निजी जीवन बीमा कंपनियों में से एक, एचडीएफसी लाइफ, ने हाल ही में गैर-भागीदारी वाली, नॉन-लिंक्ड बचत बीमा योजना, एचडीएफसी लाइफ संजय प्लस लॉन्च की घोषणा की। यह योजना ग्राहकों को गारंटीशुदा आय प्रदान करके वित्तीय योजना की अनिश्चितताओं को दूर करने में सक्षम बनाने के लिए तैयार की गई है। एचडीएफसी लाइफ संचय प्लस ग्राहकों को सबसे अच्छा रिटर्न प्रदान करता है। यह चार लाभ विकल्प प्रदान करता है जो व्यक्तियों को जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में अपनी वित्तीय जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बनाता है। यथा- गारंटीशुदा परिपक्वता, गारंटीशुदा आय, आजीवन आय और दीर्घकालिक आय।

एसडीएफसी लाइफ के चीफ एक्चुअरी एंड अप्वाइंटेड एक्चुअरी श्रीनिवासन पार्थ सारथी ने कहा कि गारंटीशुदा परिपक्वता का विकल्प परिपक्वता पर गारंटीशुदा लाभ प्रदान करता है, जो भुगतान किए गए प्रीमियम का 2.45 गुना तक हो सकता है। यह गारंटी के भरोसे के साथ वित्तीय लाभ को सुरक्षित करने में सक्षम बनाता है। गारंटीशुदा आय का विकल्प एक निश्चित अवधि के लिए परिपक्वता के बाद प्रति वर्ष वार्षिक प्रीमियम के 228 प्रतिशत तक की नियमित आय की गारंटी देता है। दीर्घकालिक आय का विकल्प भुगतान अवधि के अंत में भुगतान किए गए कुल प्रीमियम की वापसी के साथ ही, 25 या 30 वर्षों के लिए नियमित आय की गारंटी प्रदान करता है।

महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा उत्कृष्ट कार्यों के लिए विशिष्टजन सम्मानित

उदयपुर में 10 मार्च 2019 को महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन का 37वाँ सम्मान समर्पण समारोह आयोजित किया गया। फाउण्डेशन के अध्यक्ष अरविंदसिंह मेवाड़ ने पुरस्कार प्रदान किए जबकि लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने स्वागत की रस्म पूरी की।

समारोह में भामाशाह सम्मान से 18, राजसिंह सम्मान से 8 तथा फतहसिंह सम्मान से 80 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। विशिष्ट फतहसिंह सम्मान मुरैना की 10 वर्षीय अद्रिका एवं 14 वर्षीय कार्तिक गोयल बहिन-भाई को प्रदान किया गया।

'अरावली सम्मान' संदीपसिंह मान को, 'राणा पूंजा सम्मान' झालमचन्द अंगारी को, 'डागर घराना सम्मान' रूद्रवीणा वादक उस्ताद बहुद्दीन डागर को, 'महाराणा सज्जनसिंह सम्मान' मृण शिल्पी कलाकार जमनालाल कुम्हार को, 'महाराणा कुम्भा सम्मान' डॉ. गिरीशनाथ माथुर एवं डॉ. जितेन्द्र कुमारसिंह 'संजय' को, 'महर्षि हारीत राशि सम्मान' डॉ. हेमन्तकृष्ण मिश्र एवं डॉ. नरोत्तम पुजारी को, 'महाराणा मेवाड़ सम्मान' मालिनी अवस्थी को, पन्नाधाय अलंकरण सपन देबबर्मा एवं उनकी 9 वर्षीय पुत्री सुमा देबबर्मा को, 'महाराणा उदयसिंह अलंकरण' गीता शेषमणि एवं कार्तिक सत्यनारायण को, 'हकीम खाँ सूर अलंकरण' सुरेश वाडेकर को, 'हल्दीघाटी अलंकरण' स्वाति चतुर्वेदी को तथा 'कर्नल जेम्स टॉड अलंकरण' डॉ. पॉल टी. क्रैडॉक को प्रदान किया गया। 'महाराणा मेवाड़ विशिष्ट सम्मान' राज्य के सर्वश्रेष्ठ पुलिस थाना मकबरा, कोटा को प्रदान किया गया।

सम्मान समारोह के अध्यक्ष डॉ. कस्तूरीरंगन ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा दिये गए ये पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में मूल्यवान सेवाओं के अप्रतिम कारक हैं। इनसे पूरे विश्व के लोग प्रेरित होकर अपनी पहचान बनाने में सक्रिय हैं।

- डॉ. तुक्तक भानावत

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 25 महिलाएं सम्मानित

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर माउंट लिट्रा जी स्कूल, अरावली फाउण्डेशन एवं एम स्क्वायर के संयुक्त तत्वावधान में सम्मान समारोह होटल ब्लू फेदर में आयोजित किया गया। इसमें उदयपुर की 25 महिला विभूतियों को अलग-अलग श्रेणियों में सम्मानित किया गया। सम्मानितों में बादामदेवी पगारिया, पुष्पा कोठारी, डॉ. जीनी श्रीवास्तव, माया कुंभट, डॉ. विमला भंडारी, डॉ. कहानी भानावत, शांता किशनानी, डॉ. सुमन पामेचा, डॉ. अर्चना कच्छारा, डॉ. पामिल भंडारी मोदी, लीना शर्मा, डॉ. प्रीति अग्रवाल, रितु मारू, हंसा रवीन्द्र, डॉ. सुधा

कावड़िया, डॉ. राजकुमारी कोठारी, विजयलक्ष्मी गलुण्डिया, कीर्ति माहेश्वरी, रोजी बग्गा, नेहा पालीवाल, हर्षा कुमावत एवं बरखा सचदेवा सेन आदि प्रमुख हैं। मुख्य अतिथि अरावली हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. आनंद गुप्ता, माउंट लिट्रा जी स्कूल की प्रींसिपल मुनमुन चक्रवती, ब्लू फेदर होटल के आशीष छाबड़ा तथा समता युवा संस्थान के संरक्षक डॉ. सुभाष कोठारी ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। स्वागत भाषण शकुंतला सरूपरिया ने दिया। धन्यवाद की रस्म आशीष छाबड़ा ने अदा की।

- अल्पेश लोढ़ा

एक वह समय था जब श्रीलालजी ने पड़ बनाना ही छोड़ दिया था और आज वे पूरे विश्व में अपनी पहचान दिये हैं : डॉ. महेन्द्र भानावत

भीलवाड़ा में 5 मार्च 2019 को प्रख्यात फड़ चित्रकार पद्मश्री श्रीलाल जोशी की प्रथम पुण्यतिथि पर ग्रामीण हाट बाजार में उनकी

स्मृति में 'श्री दर्शन' कला-प्रदर्शनी का उद्घाटन लघुशैली के जानेमाने पद्मश्री शाकिर अली, ख्यात डिजाइनर प्रो. चिन्मय मेहता, लोककला मनीषी डॉ. महेन्द्र भानावत एवं श्रीलाल जोशी के प्रथम शिष्य शिल्पगुरु प्रदीप मुखर्जी ने किया।

इस अवसर पर आयोजित समारोह में डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि एक वह समय था जब श्रीलालजी ने फड़ बनाना ही छोड़ दिया था। सन् 1962 के जुलाई माह में तब भारतीय लोककला मण्डल के संचालक देवीलाल सामर और मैं भीलवाड़ा श्रीलालजी से उनके जोशी कला कुंज में मिले।

वे कोई 15 फीट लम्बा और ढाई मीटर चौड़ा साइनबोर्ड बना रहे थे। हमने अफसोस व्यक्त करते कहा था कि अपने पुरखों द्वारा प्रदत्त उन्हें विरासत में मिली फड़-कला को संरक्षित करना चाहिये नहीं तो इस कला का कोई नामलेवा ही नहीं रहेगा। उन्होंने बताया कि अब कोई फड़ बंचवाता नहीं है। बांचने वाले भोपों ने भी फड़ बनवाना बन्द कर दिया जिससे हमारा धंधा चौपट हो गया और आजीविका का संकट पैदा हो गया है।

चीर लीला कल्याण जोशी

हम घोर निराश लौटे और तत्काल केन्द्रीय हेण्डीक्राफ्ट बोर्ड की चेरयमेन कमलादेवी चट्टोपाध्याय को फड़-कला के महत्व और उससे जुड़ी आनुष्ठानिक परम्परा, मनौती-प्रसंग, बांचने वाले भोपे और बनाने वाले जोशी चितेरों पर आये आजीविका संकट को लेकर चिट्ठी लिखी। चिट्ठी पढ़ते ही कमलाजी उदयपुर आईं। हम उन्हें लेकर भीलवाड़ा गये। श्रीलालजी अपने स्टूडियो में उसी साइनबोर्ड को पूरा करने में लगे हुए थे। कमलाजी ने कहा कि पूरे देश के कलाजगत का धीरे-धीरे यही हश्र होने वाला है। हमने सुझाव दिया कि श्रीलालजी जितनी पड़ें बनाते आ रहे हैं उन्हें आप खरीदलें और उन्हें आधा पैसा बतौर एडवांस दे दिया जाय। यही हुआ। उन्हीं दिनों हमने कला मण्डल में नये भवन की खाली गेलेरी की दीवाल पर जोशीजी से देवनारायण की पड़ बनवाई। लोग आते रहे और उनकी पेंटिंग देख चकित होते रहे।

उन्हीं दिनों फिलाडेल्फिया से फड़ों पर विशेष अध्ययन के लिए जो मिलर कला मण्डल आए। मैंने उन्हें सबसे पहले श्रीलालजी से भेंट कराई। शाहपुरा भी गये। कई गांवों में फड़ बांचने वाले भोपों से मिले। फड़ का प्रदर्शन देखा। रेकार्डिंग और फोटोग्राफी की। एकाध जगह तो श्रीलालजी भी हमारे साथ रहे। मिलर ने उनसे सारी फड़ें तथा उनके छोटे-छोटे पीस खरीदे। अनेक पत्रों में मैंने इस कला पर आलेख लिखे।

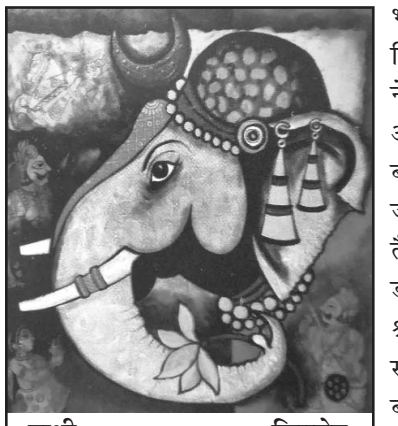
हाथी चित्रसेन

'रामदला की पड़' नाम से समग्र फड़-कला को लेकर एक पुस्तक लिखी। इसका परिणाम यह हुआ कि श्रीलालजी और उनकी फड़-कला का फलक विश्वव्यापी विस्तार नापने लगा। हमने भी अपने कला मण्डल के सेल काउन्टर पर अपने प्रकाशनों के साथ श्रीलालजी निर्मित फड़ें बेचना शुरू किया। भीलवाड़ा के निहाल अजमेरा ने तो उनसे अनेक फड़ें बनवाकर जबर्दस्त मार्केट तैयार किया। डॉ. भानावत ने श्रीलालजी की स्मृति में कोई बड़ा अखिल भारतीय कला-पुरस्कार दिये जाने का सुझाव दिया जो उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रख सके।

शाकिर अली ने कहा कि जोशीजी की कला-साधना हम सबके लिए प्रेरक है। उन्हें जो सम्मान मिले वे उनकी मेहनत के परिणाम हैं। सम्मान बड़ी मुश्किल से मिलता है। उसे न तो लौटाना चाहिये और न ही लौटाने की धमकी देनी चाहिये। चिन्मय मेहता ने प्रदर्शनी को अभिनव प्रयोग कहा। केजी कदम ने जोशीजी के जीवन कृतित्व पर प्रकाश डालते भीलवाड़ा में राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकार होने के बावजूद आर्ट गेलेरी नहीं होने पर चिन्ता व्यक्त की। गोपाल आचार्य ने नवोदित कलाकारों को जोशीजी के अवदान से प्रेरणा लेने पर बल दिया।

प्रदर्शनी में 52 कलाकारों की 60 फड़कला के प्रतीकार्थ लिए प्रयोगमूलक कृतियां प्रदर्शित की गईं। समारोह संयोजक 'चित्रकला फड़ पेंटिंग प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान' के निदेशक कल्याण जोशी ने बताया कि प्रदर्शनी में प्रस्तुत सर्वश्रेष्ठ पांच कृतियों को पांच-पांच हजार रूपयों का नकद पुरस्कार दिया जायेगा।

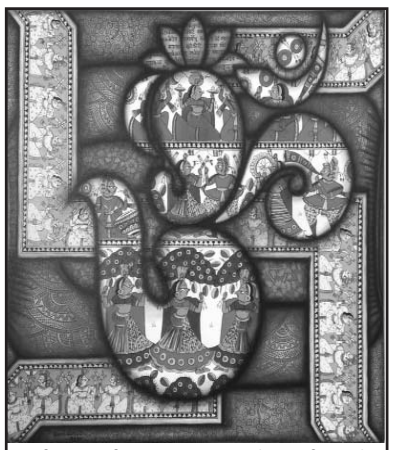
ओम्-गणेश सुनील सोमानी

समारोह में फड़ कला से सम्बद्ध विशिष्ट कार्य करने वाले नन्दकिशोर जोशी, घनश्याम जोशी, प्रवीण जोशी, जगदीश जोशी, सुरेश जोशी, शमशेर एवं कृतिका जोशी को सम्मानित किया गया।

-प्रस्तुति : चित्रसेन, उदयपुर

समारोह के दौरान श्रीनवग्रह आश्रम सेवा संस्थान के संस्थापक हंसराज चौधरी ने बताया कि उनका संस्थान मुख्यत: कैंसर रोगियों की चिकित्सा के लिए समर्पित है। विगत चार वर्षों में उनके आश्रम से 25 हजार कैंसर रोगी ठीक किये जा चुके हैं। सप्ताह में शनि और रवि को रोगियों को परामर्श एवं चिकित्सा प्रदान की जाती है। आश्रम में 405 प्रकार के ग्रहानुसार एवं बारह राशियों से सम्बद्ध वानस्पतिक पौधे उपलब्ध हैं।

समारोह में श्री चौधरी ने आयोजकों से कहा कि वे उनके आश्रम में ऐसी कार्यशालाएं आयोजित करें और चित्रकार कैंसर-क्योर से सम्बन्धित चित्र बनायें ताकि उनसे बीमारों को सीख और प्ररेणा मिले। उन्होंने भीलवाड़ा में आर्ट गेलेरी के लिए एक लाख रूपये देने की घोषणा की। उनके आश्रम के टोल फ्री नं. 8448449569 हैं।

कैसे हो आमूलचूल क्रान्ति

-डॉ. रणजीत-

नाभिकीय अस्त्रों के इस युग में पृथ्वी पर दस बार नष्ट करने लायक अस्त्र मौजूद हैं। भारत जैसे विशाल देश में रक्तरंजित क्रान्ति सम्भव नहीं है। काम्य भी नहीं है। काम्य उन लोगों के लिए हो सकती है जो केवल सत्ता चाहते हों। इतिहास गवाह है कि खूनी संघर्षों के अग्रदूतों का ऐसा राक्षसीकरण कर दिया कि क्रान्ति के मूल उद्देश्य पीछे रह गए और सत्ता-संघर्ष ही मुख्य हो गया। भारत के क्रान्तिकारियों को नये सिरे से इतिहास को खंगालना चाहिए और उससे सबक लेना चाहिए।

मेरे विचार से अपनी विशाल बेरोजगार आबादी के लिए मानव केन्द्रित तकनीकों के विकास एवं अनुप्रयोग विकेन्द्रित ढंग की जनतांत्रिक और समतावादी व्यवस्था की रचना से बुनियादी परिवर्तन का रास्ता हो सकता है। जनान्दोलनों में हमें स्त्रियों, अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों और हाशिये पर स्थित अन्तिम लोगों को शामिल करना होगा। आनुपातित चुनाव पद्धति लागू करने के लिए आन्दोलन करना होगा।

पूरी दुनिया एक परिवार हो। उसकी चुनी हुई संसद हो। संघीय सरकार हो। राष्ट्रीय सरकारें प्रान्तीय सरकारों में बदल दी जांय। न सेनाएं हों। न हथियार हों। एक ऐसी दुनिया बने जिसमें न कोई भूखा हो। न बेरोजगार हो। हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति का अधिकार हो। हर गांव, कस्बे, नगर की चुनी हुई सरकार हो।

वर्गहीन समाज के लिए सभी दलित दमित तबकों को शामिल करना है। ऐश्वर्य के सभी साधनों का उत्पादन और आयात रोक देना है। रोटी, पानी, कपड़े, मकान, चिकित्सा और रोजगार की व्यवस्था से विशाल समन्वय स्थापित हो। पूरी तरह जन आकांक्षाओं के सच्चे ईमानदार और कर्मइ प्रतिनिधियों को चुन सकें।

समतावादी दल कम से कम आमदनी की सीमा बांधे। सम्पत्ति का सामाजीकरण करते हुए गांव, मुहल्ले और नगर के स्तर पर वंचित परिवारों में वितरित करें। पूरे जनतांत्रिक और कानूनी ढंग से सभी विकेन्द्रित छोटी इकाइयां जनवादी तरीके से गठित कर समतावादी व्यवस्था का निर्माण करें।

सच्चे जनतंत्र और सच्चे समाजवाद में कोई अन्तरविरोध नहीं है। परिपूर्ण जनतंत्र के बिना सम्पूर्ण समाजवाद स्थापित ही नहीं किया जा सकता। उच्चतर नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों से सम्पृक्त सार्वभौम शिक्षा की व्यवस्था की जाय। इसके लिए शिक्षा के अतिरिक्त विकसित होते हुए वंशाणु विज्ञान की भी मदद ली जा सकती है।

(लेखक की शीघ्र प्रकाशित पुस्तक 'आमने-सामने' से)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।